दिनांक 30.06.2019 को हूल दिवस के अवसर पर दुमका में सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में माननीया राज्यपाल महोदया के अभिभाषण हेतु मुख्य बिन्दुः-

- आज हूल दिवस है। इस अवसर पर मैं संथाल हूल के महानायकों सिदो-कान्हु, चाँद-भैरव समेत सभी अमर महानायकों को नमन करती हूँ और उनके प्रति अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पित करती हूँ।
- आज संथाल हूल के अमर महानायकों सिदो एवं कान्हु के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में आप सभी के बीच सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है।
- सिदो कान्हु विश्वविद्यालय द्वारा हूल दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन करना सराहनीय पहल है। इससे हमारी युवा पीढ़ियों को अपने स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे प्रिय महानायकों के सन्दर्भ में बेहतर तरीके से अवगत होने का अवसर प्राप्त होगा तथा ऐसे महानायकों से उन्हें प्रेरणा मिलेगी। साथ ही इस क्षेत्र के लोग भी अपने प्रिय महानायकों के योगदान से गौरवान्वित महसूस करेंगे।
- उन्हें यह जानकर गर्व और खुशी होती है, जब उन्हें पता चलता है कि ऐसे आजादी के ऐसे महानायक उनके क्षेत्र के ही थे।
- भारतीय इतिहास में स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई वैसे तो सन 1857 में मानी जाती है, किन्तु इसके पहले ही

वर्तमान झारखंड राज्य के संथाल परगना में ''संथाल हूल'' और ''संथाल विद्रोह'' के द्वारा अंग्रेजों को भारी विद्रोह का सामना करना पड़ा था।

- सिदो तथा कान्हु, दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून, 1855 ई. को वर्तमान साहेबगंज जिले के भोगनाडीह गांव इस क्रान्ति का आग़ाज हुआ। इस विद्रोह के मौके पर सिदो ने घोषणा की थी– करो या मरो, अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो।
- आज भी उनके संघर्षों की कहानियाँ जो अपने पूर्वजों से सुनते हैं, पुस्तकों का अध्ययन के क्रम में पाते हैं, तो ऐसे सपूतों के प्रति गर्व के साथ श्रद्धा एवं उत्साह की भावना को तेज से भर देता है।
- मैं सदा कहती हूँ कि वैसे यह सत्य है कि ये देश उन्हीं का स्मरण करता है जिसने देश को कुछ दिया हो। स्वयं के लिए धन–दौलत जमा कर आप खुद एवं परिवार को तो सुख–भोग करा सकते हैं, लेकिन ये देश तभी आपको याद करेगा जब आप देश को कुछ दे सकें, देश के लिए कुछ कर सकें। आज यह देख सकते हैं कि हम अपने वीर सपूतों को देश के लिए किये गये त्यागों एवं उनके बहुमूल्य योगदानों के लिए याद कर रहे हैं।

- हम सभी को अपने ऐसे महानायकों एवं देशभक्तों से सीखना चाहिये कि उन्होंने किस विपरीत परिस्थिति में भी राष्ट्र के लिए साहसिक कार्य किया। ऐसे महानायक हमारे समक्ष आदर्श हैं। इनसे प्रेरित होर हमारे विद्यार्थियों के

साथ–साथ सभी लोगों को भी एक देशभक्त के रूप में भी जाना जाय, राष्ट्रप्रेम की भावना उनमें प्रबल हो, ऐसा प्रयास हो।

- इस अवसर पर मैं कहना चाहूँगी कि सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय का यह दायित्व है कि वे हमारे विद्यार्थियों को निपुण एवं दक्ष बनायें। जहाँ कहीं भी हमारे ये विद्यार्थी रहें, अपने कार्य, व्यवहार एवं सहयोग की भावना से सबका नाम रौशन करें।
- चांसलर के रूप में मेरी इच्छा है कि सिदो कान्हु मूर्मू विश्वविद्यालय शिक्षा एवं अनुशासन के क्षेत्र में एक ऐसी पहचान स्थापित करे कि अन्य राज्यों से भी लोग यहाँ नामांकन के लिए आयें। हमारे शिक्षण संस्थान सिर्फ डिग्री न दें, हमारे युवा और शिक्षक दोनों इस चीज़ को समझें। सिर्फ डिग्री से कुछ नहीं होनेवाला है। आज का युग ज्ञान आधारित है और ज्ञान की कद्र होती है।
- उच्च शिक्षा के विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण संस्थानों में आधारभूत संरचना उपलब्ध हों। साथ ही Classes नियमित हों, पुस्तकालय में पुस्तकें उपलब्ध हो, हमारी प्रयोगशाला विकसित हो।

- मैंने जब विश्वविद्यालय में संचालित विभिन्न विषयों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की बैठक राज भवन में आहुत की थी, तो ये सब समस्यायें ही हमारे प्रिय विद्यार्थियों ने बतलाई थी। हालांकि अब इन क्षेत्रों में कार्य हो रहे हैं। शिक्षकों की कमी को तत्काल दूर करने पर घंटी आधारित अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति की गई है। आशा है कि इन शिक्षकों की नियुक्ति होने से कक्षा नियमित होने की दिशा में प्रगति हुई होगी। इसके अतिरिक्त सत्र के नियमितीकरण की दिशा में प्रबल प्रयास किया जा रहा है, सभी विश्वविद्यालयों को निदेशित किया गया है।
- विश्वविद्यालय परिसर में सर्वत्र ज्ञान का वातावरण निर्मित हों। हमारे शिक्षक विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करें। वे गुरू कौटिल्य एवं द्रोणाचार्य आदि की तरह शिष्यों को निपुण बनायें। गुरू–शिष्य का संबंध अधिक प्रगाढ़ हो, ताकि नैतिक मूल्यों का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया जा सके।
- हमारे विद्यार्थियों को सदैव अनुशासित होकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये। अनुशासन के बिना सफलता प्राप्ति संभव नहीं है। उन्हें मूल्यों पर जोर देना होगा। उन्हें अपने जीवन में नैतिकता और संस्कार पर सदा बल देना होगा। चारित्रिक बनना होगा।
- जीवन में यदि कामयाबी हासिल करनी है तो ये सब सबसे जरूरी है कि क्योंकि आपको सबसे पहले एक अच्छा इंसान बनना होगा। और जो अच्छा इंसान बन गया, वह

अपनी राह स्वयं चयन कर लेता है। सही मार्ग पर चलकर कामयाबी हासिल कर ही लेता है।

- सभी को अपनी कला–संस्कृति के प्रति भी प्रेम रखना चाहिये। खेलकूद भी आवश्यक है। इस दिशा में भी बच्चों को प्रोत्साहित करने हेतु विश्वविद्यालय को निदेश दिया गया है।
- अन्त में, यही कहूँगी कि इस विश्वविद्यालय के विकास हेतु सभी पदाधिकारी, शिक्षक एवं कर्मी टीम भावना के तहत कार्य करें। एक बार पुनः हुल क्रान्ति के महानायकों को नमन।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!